अंगूर

मिट्टी एवं जलवायु

जलवायु

अंगूरों को आमतौर पर अपने विकास और फलने की अवधि के दौरान गर्म और शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। यह उन क्षेत्रों में सफलतापूर्वक उगाया जाता है जहां तापमान रेंज 15-40 डिग्री सेल्सियस हो। फलों की ग्रोथ और विकास के दौरान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान होने पर यह बेरी साईज और फल की स्थिरता का कम करता है। अग्रणी छंटाई के दौरान 15 डिग्री सेल्सियस के कम तापमान होने पर कलियां टूट जाती है जिससे फसल खराब हो जाती है।

कलियों की परिपूर्णता प्रकाश से प्रभावित है। अधिकतम ग्रोथ के लिए 2400 फीट हल्की तीव्रता वाली कैन्डल आवश्यक है। हालांकि, सक्रिय ग्रोथ स्टेज (छंटाई के बाद 45-75 दिन) और फल कलियों के फारमेशन के दौरान कम रोशनी की तीव्रता फसल पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

यह सबसे सफलतापूर्वक 200-250m से ऊपर m.s.l ऊंचाई रेंज में उगाया जाता है

वह क्षेत्र जहां पूरे वर्ष में वार्षिक वर्षा 900mm से अधिक न हो, उस क्षेत्र को अच्छा माना गया है। हालांकि, फलावरिंग और फ्रट राइपनिंग के दौरान बारिश होना अनुकूल नहीं माना जाता है क्योंकि इससे कोमल फफूंदी रोग फैलता है।

उच्च वायुमंडलीय आर्द्रता वनस्पति विकास और फलने के दौरान हानिकारक है। उच्च आर्द्रता की स्थिति में बेलों का वनस्पति विकास ओजपूर्ण होता है जो फल आकार और गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसी प्रकार, अग्रणी छंटाई के बाद 30-110 दिनों के दौरान उच्च आर्द्रता फंगल रोग को बढ़ाने में अनुकूल है।

धरती

अंगूरों की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी अर्थात रेतीले लोमस, रेतीले क्ले लोमस, लाल रेतीली मिट्टी , हल्की काली मिट्टी और लाल लोमस पर की जा सकती है। मिट्टी अच्छी तरह से शुष्क होनी चाहिए, अच्छा पानी रोकने की क्षमता हो और किसी भी हार्ड पैन से मुक्त हो या उच्च 90 सेंमी. में प्रबल लेयर की हो तथा कम से कम 6.5एम से नीचे वाटर टेबल की हो। अंगूरों को सफलतापूर्वक मिट्टी की विस्तृत रेज पीएच (4.0-9.5) से ज्यादा होने पर भी उगाया जा सकता है, हालांकि, मिट्टी की 6.5-8.0 पीएच रेंज को ही आर्दश माना गया है।

अधिक अंगूर उगाने वाले क्षेत्र	**मिट्टी के प्रकार**
उत्तरप्रदेश व हरियाणा	सैन्डी लोमस सैन्डी क्ले लोमस
आन्ध्रप्रदेश	लाल मिट्टी की धरती
उत्तरी आंतरिक कर्नाटक व महाराष्ट्र	शैलो-मिडियम डीप ब्लैक
दक्षिणी आंतरिक कर्नाटकव तमिलनाडू	लाल लोमस